कक्षा - बी.ए. तृतीय वर्ष

विषय - हिन्दी

डॉ . जोगेश

हरियाणवी उपन्यास साहित्य की विकास यात्रा

उपन्यास एक गद्य विद्या है। 'उपन्यास' शब्द दो शब्दों के योग से बना है - 'उप' तथा 'न्यास'। 'उप' का अर्थ समीप, न्यास का अर्थ है रचना । अर्थात उपन्यास वह है जिसमें मानव जीवन के किसी तत्व को उक्ति -उक्त के रूप में समन्वित कर समीप रखा जाए। इसमें उपन्यासकार मानव जीवन से संबंधित सुखद एवं दुखद किंतु मर्मस्पर्शी घटनाओं को निश्चित तारतम्य के साथ चित्रित करता है। उपन्यास साहित्य की दृष्टि से हरियाणवी को बहुत अधिक वैभव - संपन्न नहीं कहा जा सकता | हरियाणवी भाषा में अभी तक बहुत कम उपन्यास लिखे गए हैं। उपन्यास साहित्य के क्षेत्र में केवल चार उपन्यास मिलते हैं

1. झाड़ूफिरी - राजा राम शास्त्री
2. फफा कुट्टणी - राजा राम शास्त्री
3. समझणिए की मर - डॉ- श्याम सखा 'श्याम'
4. जाट कहवै, सुन जाटणी - प्रदीप नील

राजाराम शास्त्री द्वारा रचित उपन्यास हरियाणवी भाषा में लिखा गया प्रथम उपन्यास है। यह एक सामाजिक उपन्यास है। यह उपन्यास लोकमंच प्रकाशन दिल्ली - टोहाना से सन 1966 ई० में प्रकाशित हुआ | उपन्यास में दो नव-युवकों की समानांतर कथा चलती है | उपन्यास का कथानक अनेक घटनाओं और दांपत्य जीवन के संबंधों को लेकर उतार-चढ़ाव वाली घटनाओं से ओत- प्रोत है। आधुनिक नव-युवकों के आचार - विचार और व्यवहार को स्पष्ट करता है कि स्त्रियां तो अनेक कष्ट उठाकर अपने गृहस्थ जीवन का पालन करती है और पति प्रेम प्राप्त करने के लिए निरंतर परिवर्तनशील रहती है | पुरुष आधुनिक पश्चिमी सभ्यता के रंग - में - रंग कर अपने गृहस्थ जीवन के कर्तव्यों का पालन नहीं करते हैं। कथानक में अनेक मनोवैज्ञानिक विचारधाराओं के अनुसार मोड़ आ जाते हैं।

उपन्यास में जग्गु और दिनेश दोनों नव - युवकों की प्रेम कहानी को प्रथम दिन से ही बेमेल चित्रित किया गया है | दोनों का वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं है। उपन्यास के कथानक ने बीसवीं सदी में विवाह के संबंध में लड़के लड़कियों की अवधारणा को बदल दी है | उपन्यास के संवाद में नाटकीयता का समावेश है । उपन्यास के संवाद सरल, रोचक और संक्षिप्त है। लेखक ने उपन्यास में पात्रों का चरित्र चित्रण भी बड़े नाटकीय और मनोवैज्ञानिक ढंग से किया है। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में जग्गू, दिनेश, पारो, ललिता, नलिनी, नन्हे राम, राजेंद्र बाबू तथा बाबू बृजमोहन है।

'झाड़ूफिरी' की उपन्यास में वैसे तो कई शैलियों का प्रयोग हुआ है। लेकिन उपन्यास की एक अलग विशेषता इसका पत्रात्मक शैली का प्रयोग है।

अतः झाड़ूफिरी उपन्यास एक सामाजिक उपन्यास है जिसमें यह ध्वनित हुआ है कि पति पत्नी का एक दूसरे के साथ विश्वास और प्रेम पूर्ण व्यवहार होना चाहिए। इस उपन्यास में हरियाणवी लोक - जीवन का सजीव चित्रण हुआ है | श्री राजाराम शास्त्री का दूसरा उपन्यास '**फफा कुट्टणी'** है यह भी एक सामाजिक सरोकारों वाला उपन्यास है जिसमें सामाजिक मूल्यों को बचाने की जद्दोजहद को प्रस्तुत किया गया है।

तीसरा हरियाणवी उपन्यास '**समझणिए की मर'** है जिसके लेखक डॉ० श्याम सखा 'श्याम' है | जिसका प्रकाशन सन् 2003 में प्रयास ट्रस्ट रोहतक द्वारा करवाया गया है। इस उपन्यास का नामकरण पंडित लख्मीचंद की रागणी के आधार पर रखा गया है |

लै कै दे दै, कर कै खाले,
उस तै कूण जबर हो सै
नुगरा माणस नज़र फेरज्या
समझणिए की मर हो सै |"

उपन्यास का कथानक दो वक्ताओं और दो श्रोताओं को सुनाई गई बातचीत पर आधारित है। ठेठ हरियाणवी समाज और संस्कृति के दर्शन कराता यह उपन्यास ग्रामीण समाज का दर्पण है | उपन्यास की कथा मेघुल गोत्र और सिमरन गोत्र के जाट किसानों के इर्द-गिर्द घूमती है | भरत सिंह और उसके दो बेटे रणसिंह और रघुबीर रोहतक के एक गांव के रहने वाले थे। छोटा बेटा रघुवीर पहलवान और बड़ा रणसिंह मेडिकल कॉलेज में नौकर था | उन दोनों का विवाह नरेला के एक किसान परिवार में हुआ | रघुवीर की पत्नी सुशीला अनोखी किस्म की औरत थी, जबकि उसकी बड़ी बहन सरला रणसिंह सिंह की पत्नी बड़ी सरल थी। रघुवीर की मृत्यु के बाद सुशीला स्वेछाचारिणी हो जाती है |

'समझणिए की मर' में डॉ० दहिया एक चिकित्सक हैं वे समाज में प्रचलित अंधविश्वासों, कुरूतियों, विसंगतियों और कुप्रथाओं का घोर खंडन करता है उपन्यास में संवाद लंबे जरूरी है परंतु उनमें आदर्श और यथार्थ का समन्वय दृष्टिगोचर होता है। उपन्यास में अनेक चरित्रों का चित्रण हुआ है । भारतीय देहाती जीवन के लोगों से लेकर अमेरिकन के नीग्रो और गोरों का चित्रण

इस उपन्यास में स्पष्ट झलकता है उपन्यास में परंपरागत चरित्र भी है ।

उपन्यासकार ने इस उपन्यास में मुहावरे - लोकोक्तियो, सूक्तियों और गीतों का प्रयोग प्रसंगानुकूल किया है। उपन्यास वर्णनात्मक शैली में लिखा गया है ।

प्रदीप द्वारा रचित एक अन्य उपन्यास 'जाट कहवै, सुन जाटणी' है। जिसका प्रकाशन वर्ष 2017 है। यह उपन्यास हरियाणवी भाषा में लिखा गया है। जिसमें हरियाणा प्रदेश के अंचल विशेष में प्रचलित रीति-रिवाजों, विश्वासों - आस्थाओं, बोली, भाषा, समाज, धर्म, राजनीति आदि सभी समस्याओं का बखूबी चित्रण हुआ है। इस उपन्यास में हरियाणवी लोक जीवन अपनी समग्रता के साथ मुखरित हो उठा है। 'जाट कहवै, सुन जाटणी' उपन्यास वर्तमान समय की दुरभिसंधि की करुण कथा है। इस उपन्यास में लेखक ने जिस संघर्ष में प्रमोद को उतारा है, विडंबना यह है कि उसे काल्पनिक विजय का नायक नहीं बना पाया।

उपन्यास एक ऐसे जादुई यथार्थ को बुनता है जो हमें भी कचोटता है और हालात के प्रति सचेत भी करता है। लेकिन साप क्रूर सत्ता के समक्ष आम जन की असहायता को रेखांकित करता है। यह उपन्यास हरियाणवी उपन्यास साहित्य में परंपरा को एक नया मोड़ देता है। हास्य व व्यंग्य से परिपूर्ण यह उपन्यास अद्भुत है ।

निष्कर्ष -

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि राजा राम शास्त्री के 'झाड़ू फिरी' उपन्यास से लेकर प्रदीप नील के 'जाट कहवै, सुण जाटणी' तक हरियाणवी उपन्यास उंगलियों पर गिने जा सकते हैं। इन उपन्यासों को देखकर लगता है कि यह हरियाणवी उपन्यास साहित्य का आविर्भाव ही है। सभी उपन्यासों का धरातल समाज ही है। जिनमें हरियाणा की संस्कृति का बखूबी चित्रण हुआ है।